बीमार गाय

लेखन: एच. ई. टॉड, चित्र: वैल बीरो

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बीमार गाय

लेखन: एच. ई. टॉड, चित्र: वैल बीरो

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक दिन बॉबी ब्रूस्टर किसान के साथ खेत में जा रहा था, जब उन्हें खेत के बीचोंबीच बैठी एक गाय नज़र आई। वह अपने हाल पर दुख मनाती दिख रही थी।
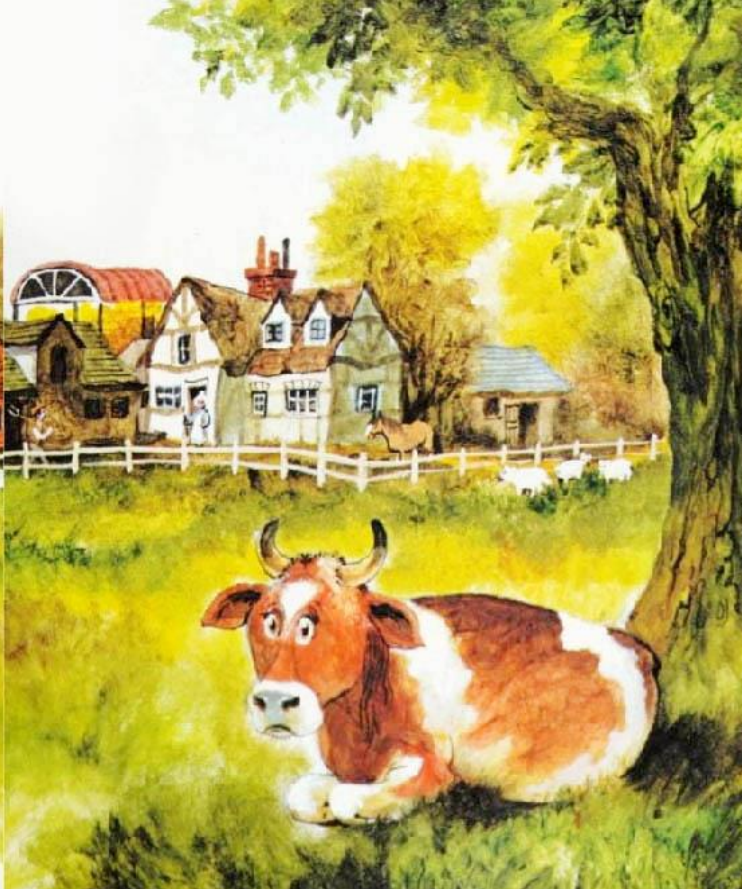
किसान ने कहा, "सुप्रभात गैय्या।" गाय ने नज़र उठा कर देखा और बोली "भौं-भौं।"

"माफ़ करना, क्या कहा तुमने?" किसान ने चौंक कर पूछा।

"भौं-भौं" गाय ने दोहराया।
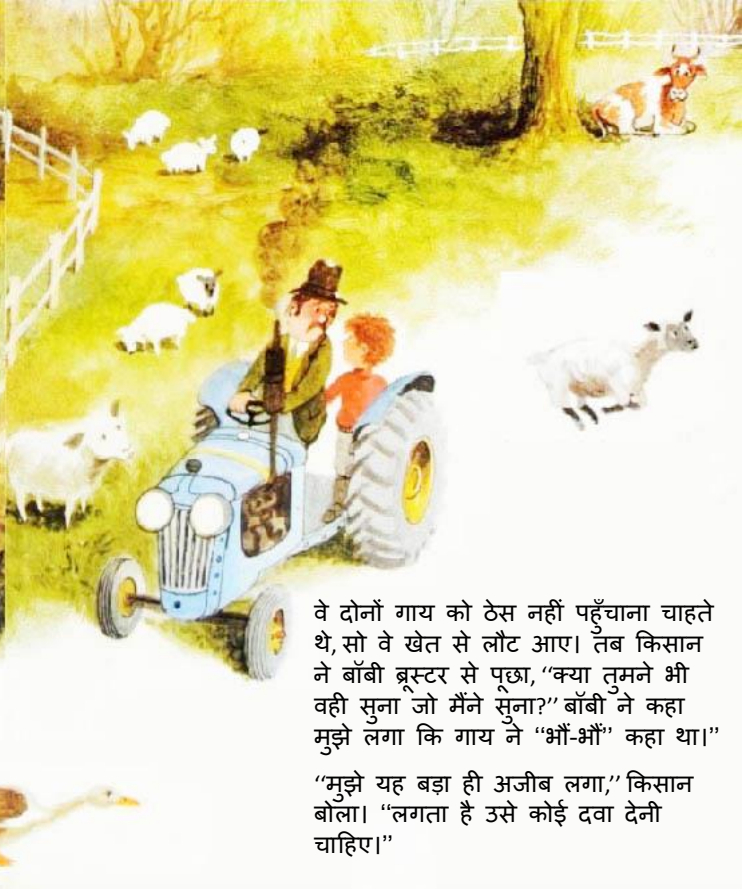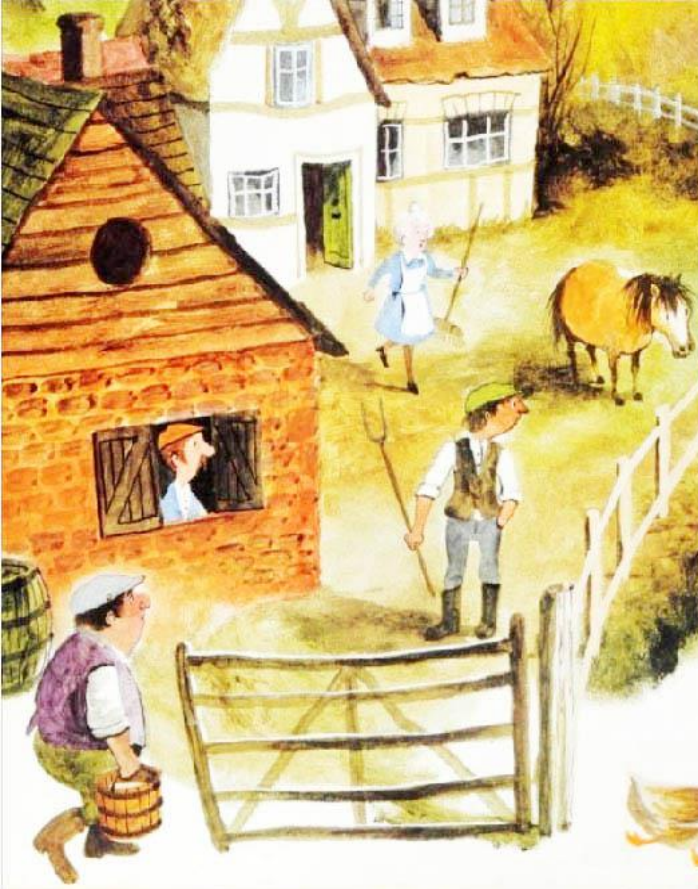
वे दोनों गाय को ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे, सो वे खेत से लौट आए। तब किसान ने बॉबी ब्रूस्टर से पूछा, ''क्या तुमने भी वही सुना जो मैंने सुना?'' बॉबी ने कहा मुझे लगा कि गाय ने ''भौं-भौं'' कहा था।''

''मुझे यह बड़ा ही अजीब लगा,'' किसान बोला। ''लगता है उसे कोई दवा देनी चाहिए।''
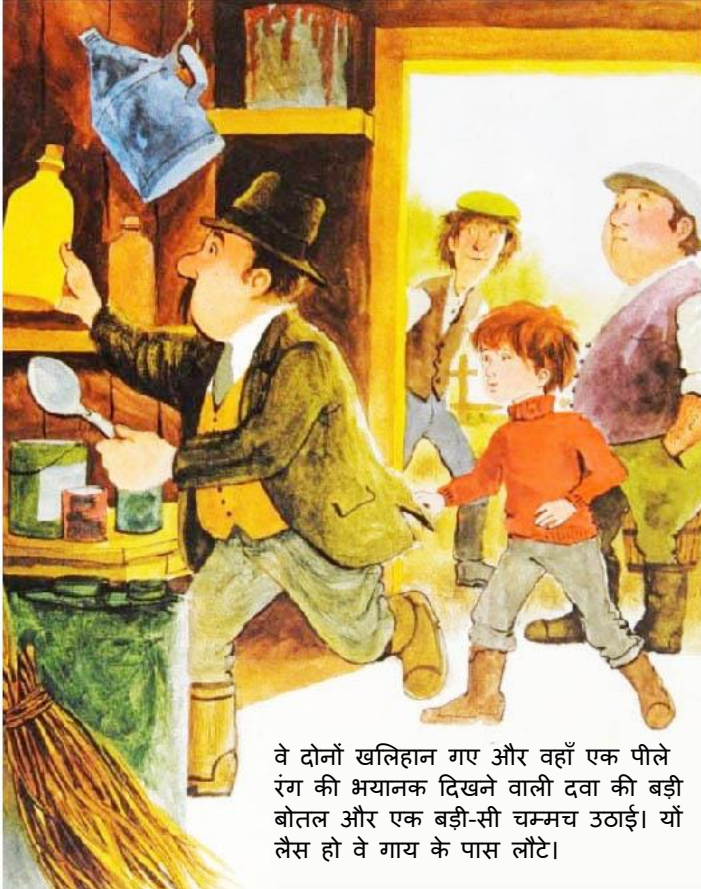
वे दोनों खलिहान गए और वहाँ एक पीले रंग की भयानक दिखने वाली दवा की बड़ी बोतल और एक बड़ी-सी चम्मच उठाई। यों लैस हो वे गाय के पास लौटे।

पर गाय ने अपना मुँह खोला ही नहीं, सिवा "भौं-भौं" कहने के। उन्होंने लाख कोशिश की कि वे पहले "भौं" और दूसरे "भौं" के बीच गाय के मुँह में दवा से भरा चम्मच घुसेड़ दें। पर वे नाकाम रहे।
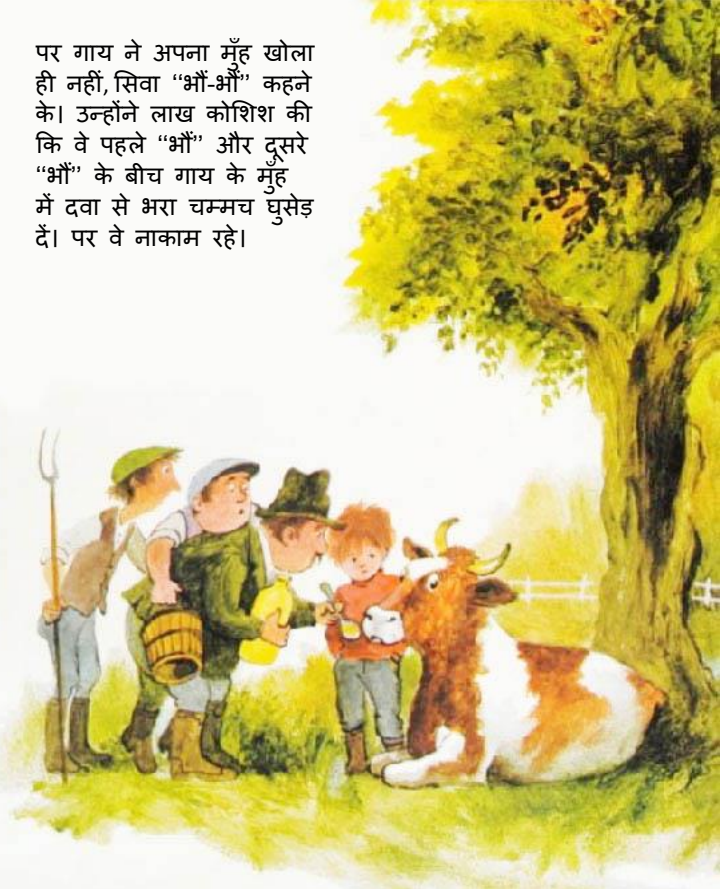
''हमें गायों के डॉक्टर को बुला लेना चाहिए,'' किसान ने फ़िक्र से कहा। किस्मत से गायों का डॉक्टर बहुत दूर नहीं रहता था। वह जल्दी ही अपना काला झोला उठाए आ गया। तब गायों का डॉक्टर, किसान और बॉबी ब्रूस्टर, खेत पार कर गाय के पास पहुँचे। गाय का हाल अब बदतर लग रहा था।
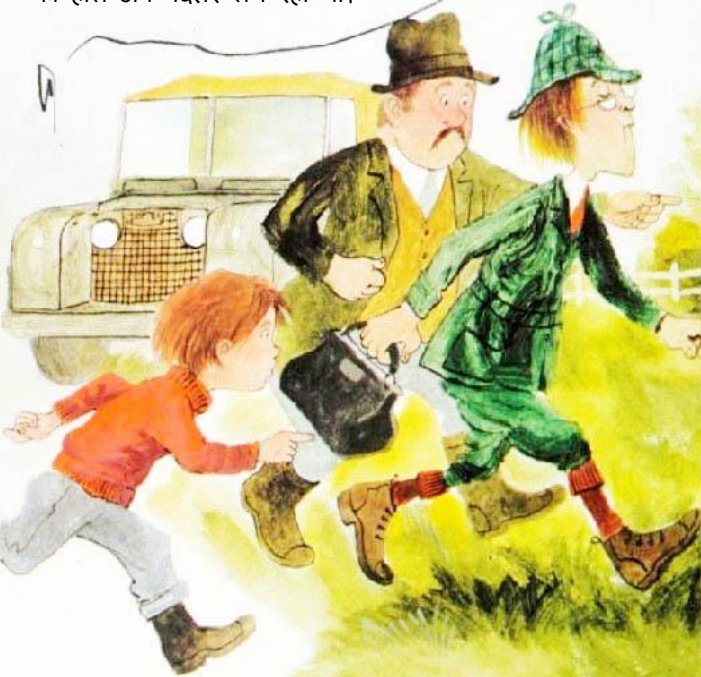
"तुम्हें हुआ क्या है, गाय?" गायों के डॉक्टर ने पूछा। "भौं-भौं" गाय ने कहा। "माफ़ करो, क्या कहा तुमने?" गायों के डॉक्टर ने चकरा कर पूछा।

"भौं-भौं" गाय ने दोहराया।

"ओहो, ज़ाहिर है इसे कुत्ता रोग हो गया है।"

"मुझे इसे कुत्ता रोग की गोली देनी पड़ेगी।"

गायों का डॉक्टर सयाना था। उसने एक लम्बी नलकी ली, उसके एक सिरे पर एक बड़ी-सी सफ़ेद गोली रखी। तब किसान ने जबड़े पकड़ गाय का मुँह खोला और डॉक्टर ने फूँक मार कर गोली सीधे गाय के पेट में पहुँचा दी। गाय धप्प से बैठी और सो गई।

"हम इसे ऐसे ही शान्ति से आराम करने छोड़ देते हैं," गायों का डॉक्टर बोला। "मैं कल सुबह आकर फिर से इसका हाल देख लूंगा।"

अगली सुबह गाय का हाल बदतर लग रहा था। “आज सुबह कैसा महसूस हो रहा है गाय?” गायों के डॉक्टर ने पूछा। गाय ने ऊपर देखा और बोली, “म्यांऊ!”

“माफ़ करना, क्या कहा?” गायों के डॉक्टर ने चौंक कर पूछा।

“म्यांऊं!” गाय ने दोहराया।

“कल तो इसे कुत्ता रोग था, सो मैंने कुत्ता रोग की गोली दे दी थी,” गायों का डॉक्टर बोला।

“पर अब इसे बिल्ली रोग हो गया है! भाई यह तो मेरी समझ से परे है। हमें गायों के विशेषज्ञ को बुलाना होगा।”

गायों का विशेषज्ञ बड़ा ही मशहूर इन्सान था। वह उस जगह रहता था जिसे विएना कहा जाता है, जो ऑस्ट्रिया की राजधानी है।

वह अगली सुबह एक हैलिकॉप्टर से आया और वहाँ उतरा जिसके पास वाले खेत के बीच गाय बैठी थी।

वह लम्बे डग भरता खेत में बढ़ा, और उसके पीछे-पीछे थे गायों का डॉक्टर, किसान और बॉबी ब्रूस्टर।

''कैसी हो गाय?'' विशेषज्ञ ने पूछा। गाय ने ऊपर देखा और बोली ''क्वैक! क्वैक!'' गायों के विशेषज्ञ ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। ''चलो उठो,'' उसने सख़्त आवाज़ में गाय से कहा। गाय को उसका ऐसे बात करना पसन्द तो नहीं आया पर वह उठ गई। ''अब खेत के गिर्द दौड़ लगाओ,'' गायों के विशेषज्ञ ने हुकुम दिया।
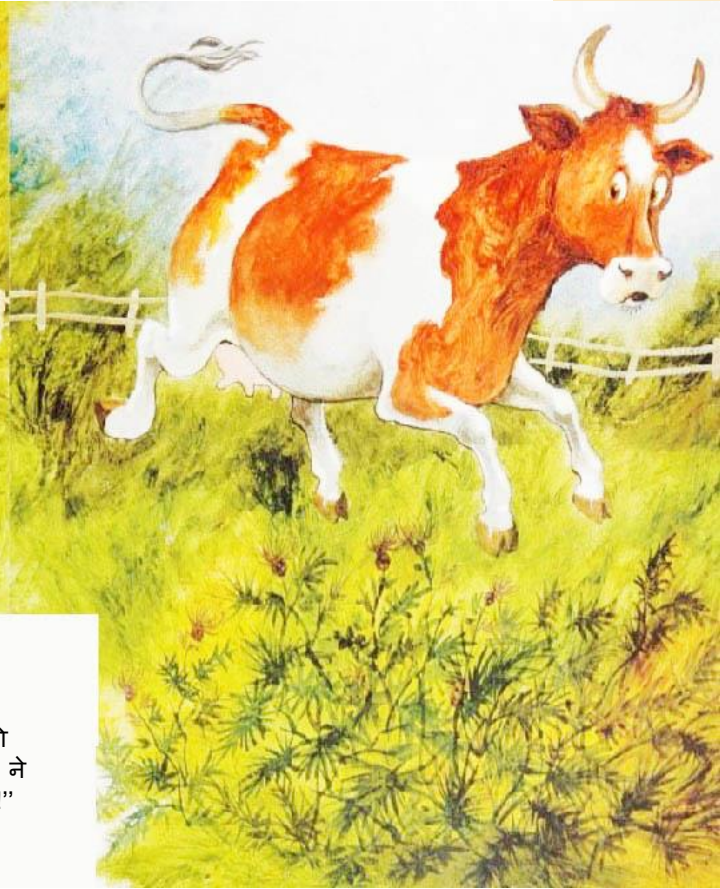
खेत में दौड़ने का गाय का मन कतई नहीं था, पर वह फिर भी दौड़ी। जब वह कंटीले गोखरु की झाड़ों के बीच थी, गाय विशेषज्ञ ने चीख कर कहा, ''अब बैठ जाओ!''

बाँआआआ!

गाय गोखरु की झाड़ों के बीच धम्म से बैठी और ‘‘बाँआआआ’’ कहती उछल कर खड़ी हो गई।

“तुमने क्या कहा? गायों के विशेषज्ञ ने पूछा।
“बाँआआआ!” गाय ने दोहराया।

उस दिन के बाद से गाय ने “बाँआआआ” के अलावा कुछ नहीं कहा। यह सिद्ध करता है कि गायों का विशेषज्ञ कितना चतुर गाय विशेषज्ञ था।

बाँआआआ!   बाँआआआ!

बाँआआआ!

किसान बड़ा खुश था। उसने गायों के डॉक्टर, गायों के विशेषज्ञ और बॉबी ब्रूस्टर को अपने घर चाय पीने बुलाया।
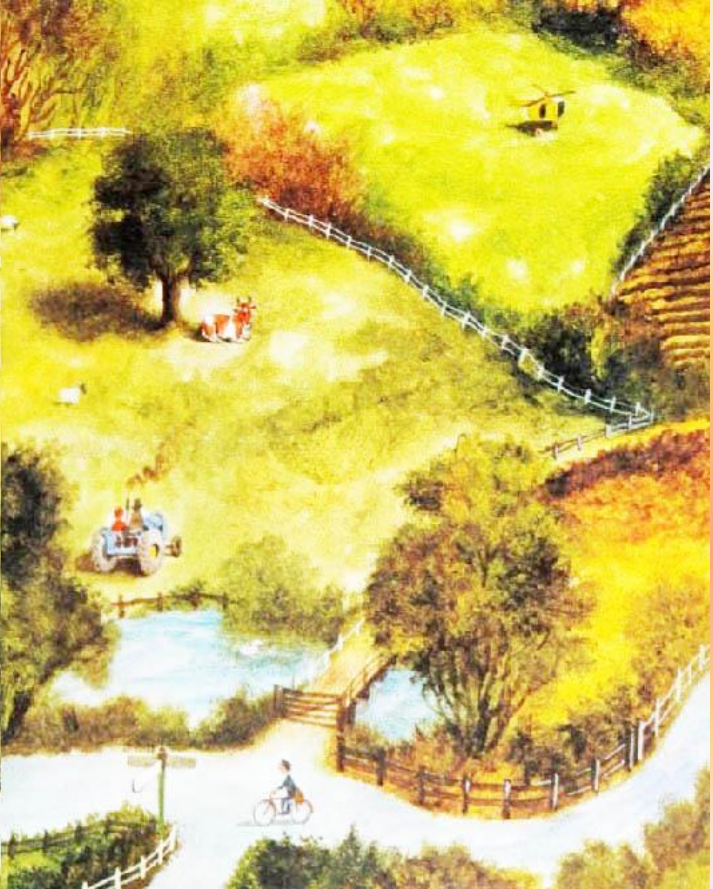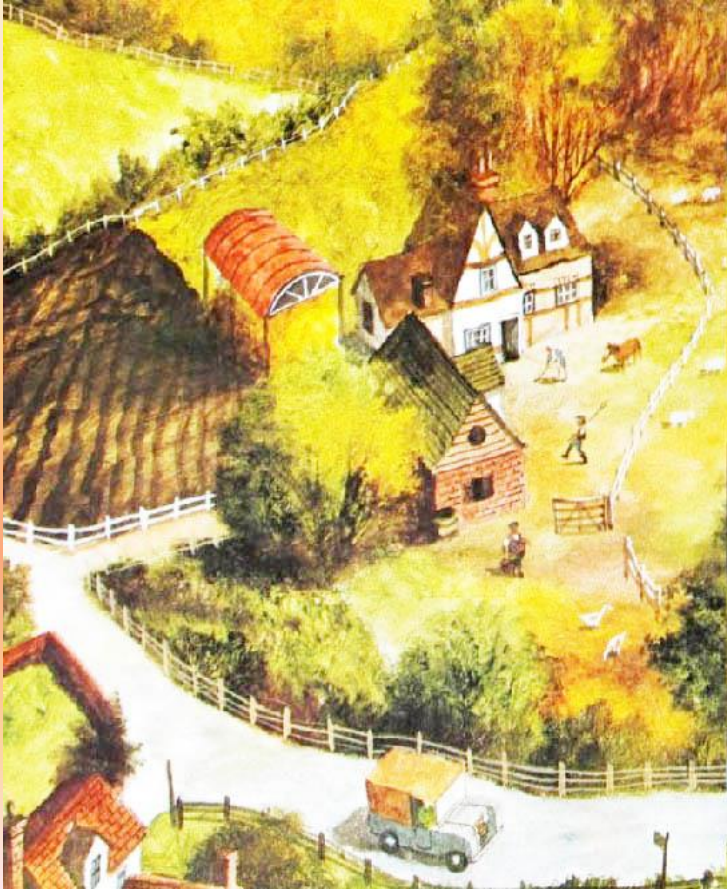
वैल बीरो ने हमेशा की तरह बड़े उत्साह के साथ बीमार गाय के लिए चित्र बनाए हैं। यह पहली बॉब ब्रूस्टर कहानी है जिसकी रचना एच. ई. टॉड ने की है। यह सुन्दर, आसान और बच्चों को पढ़ कर सुनाई जा सकने वाली कथा है। - डेली टेलिग्राफ

अनुशंसित क़िताब।
- बुक्स फॉर योर चिल्ड्रन

यह एक स्वाभाविक विजेता है।
- न्यूज़एजेंट व बुकशॉप में नओमी लेविस की टिप्पणी